कृति : **विशद श्री सम्मेद शिखर चौबीसी निर्वाण क्षेत्र विधान (लघु)**

कृतिकार : प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण : प्रथम-2023 प्रतियाँ : 1000

संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोगी : आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी

क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी

संपादन : ब्र. ज्योति दीदी 9829076085

ब्र. आस्था दीदी 9660996425

ब्र. सपना दीदी 9829127533

ब्र. आरती दीदी, 8700876822

ब्र. प्रदीप, 7568840873

प्राप्ति स्थल: 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, 9413336017

2. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी, 09416888879

3. महेन्द्र जैन रोहिणी से.-3, दिल्ली

www.vishadsagar.com.app-vishadsagarji

मूल्य : 31/- रु. मात्र

मुद्रक : पारस प्रकाशन, दिल्ली

मो. 9811374961, 9811363613

pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

24 तीर्थंकर निर्वाण भक्ति पूजा विधान

''निर्वाण भक्ति करते रहने से सुलभ हो जाती है निर्वाण पद की प्राप्ति''

तीर्थंकर की भक्ति मनोयोग से करने से जीवन में अद्‌भुत शक्ति की प्राप्ति होती है भक्ति से शक्ति, शक्ति से युक्ति और युक्ति से मुक्ति प्राप्त होती है। अत: जीवन की नैय्या को भक्ति रूपी डोरी से जोड़ दो, क्योंकि भक्ति ही भगवानकी सच्ची राह है। भक्त की भक्ति ही भगवान से मिलती है।

यहाँ प्रस्तुत पुस्तक में 24 तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों की 24 भक्तियों का संस्कृत में प्रस्तुतीकरण किया जा रहा है। अभी तक जिनवाणी में सिर्फ महावीर भगवान की ही निर्वाण भक्ति उपलब्ध हो पा रही थी शेष 23 तीर्थंकरों की निर्वाण भक्तियों का लोप था प्रथम बार आ. श्री वासुपूज्य सागर जी के संघ ने 24 तीर्थंकरों की निर्वाण भक्ति संस्कृत में लिखने का पीड़ा उठाया उसकी एक प्रति हमे प्राप्त हुई पढ़कर हमने अपने आचार्य श्री विशद सागर जी से कहा गुरुवर जिस दिन जिस भगवान का मोक्ष कल्याणक होता है उस दिन उन्हीं तीर्थंकर भगवान की निर्वाण भक्ति पढ़ी जानी चाहिए अभी तक सिर्फ महावीर निर्वाण भक्ति थी लेकिन अब 24 तीर्थंकर की निर्वाण भक्ति भी उपलब्ध हो गई है इसका प्रचार होना चाहिए। प्रस्तुत 24 तीर्थंकर निर्वाण भक्ति की भाषा थोड़ी जटिल है।

परमपूज्य आचार्य श्री पूज्य पाद जी कृत महावीर स्वामी की निर्वाण भक्ति को आधार बनाकर अन्य 23 तीर्थंकरों की निर्वाण भक्ति बनाई गई है। त्यागी वृत्तियों को तो इन 24 तीर्थंकर पंचकल्याणक भक्तियों को करने का लाभ मिल ही रहा है साथ ही श्रावक समुदाय भी इन भक्तियों से लाभान्वित हो इस हेतु यहाँ इन भक्तियों को वृहद् रूप देकर 24 तीर्थंकर निर्वाण भक्ति पूजा विधान की रचना आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज ने की है।

श्री सम्मेद शिखर मण्डले की भव्य रचना कर यह निर्वाण भक्ति विधान भक्ति भाव से करना चाहिए यदि विधान नहीं करना तो जिस दिन जिस भगवान का कल्याणक हो उस दिन उन्हीं भगवान की निर्वाण भक्ति के पश्चात पूजा करके निर्वाण काण्ड बोल कर निर्वाण क्षेत्र का अर्घ्य चढ़ाना चाहिए। **प. पू. आचार्य श्री विशद सागर जी** महाराज अब तक 150 प्रकार के पूजन विधानों की रचना कर चुके हैं। सभी विधान एक से बढ़कर एक है आशा है। प्रभु भक्ति में अधिकाधिक संख्या में आप इन विधानों को करके पुण्यार्जन करेंगे।

–मुनि विशाल सागर

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव-शास्त्र--गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण।।
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदि, पूज्य हुए जो जगत प्रधान।।
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक .... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नि, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरि का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं।।

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्ति नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मोंकृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार॥

शान्तये शांतिधारा...

दोहा– पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।
सुख-शांती सौभाग्यमय, होवे सकल समाज॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

पंच कल्याणक के अर्घ्य

तीर्थंकर पद के धनी, पाएँ गर्भ कल्याण।
अर्चा करें जो भाव से पावें निज स्थान॥1॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार॥2॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर॥3॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान॥4॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान॥5॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान॥

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ती जीवों में, और ना मिलते अन्य कहीं॥
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा॥1॥
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल॥
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते हैं पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण॥2॥
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश॥
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष॥3॥
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है॥

आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिन आगम जग उपकारी।।4।।
प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता शीघ्र प्रकाश।।5।।
वस्तु तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैरागय जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तु पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुःख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति धर्मादि का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याय भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुःख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा– नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने नाथ हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ती पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

"सम्मेद शिखर तीर्थ वन्दना"

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अम्बर की जय हो, शाश्वत सिद्ध क्षेत्र की जय हो।

सोरठा

शाश्वत तीर्थ त्रिकाल, पूज्य रहा इस लोक में।
करते चरण प्रणाम, हुए सिद्ध जो भी विशद।।

तर्जः-यह देश है वीर जवानों का...

यह तीर्थ है जिन अर्हन्तों का, जो मोक्ष पधारे सिद्धों का।
यह तीर्थ है गुरु निर्ग्रन्थों का, ऐ परमेष्ठी भगवन्तों का।।
हम गणधर कूँट की जय बोलें, श्री जिन की भक्ति में डोलें।
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो, जय हो-जय हो-जय।।1।।

यहाँ कूँट ज्ञानधर है भाई, श्री कुन्थुनाथ का शिवदाई।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये।जय हो...
यहाँ नमीनाथ जी शिव पाए, जो कूँट मित्रधर कहलाए।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये।जय हो...
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो, जय हो-जय हो-जय।।2।।

यहाँ नाटक कूट भी कहलाए, श्री अरहनाथ शिव पद पाए।
प्रभु अपने.....जय।।
है संबल कूँट यहाँ भाई, श्री मल्लिनाथ का शिवदाई।
प्रभु अपने.....जय।।
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो, जय हो-जय हो-जय।।3।।
यहाँ संकुल कूँट है मनहारी, श्रेयांस नाथ का शिवकारी।
प्रभु अपने.....जय।।
यहाँ पुष्पदन्त जिनवर आए, जो सुप्रभ कूट से शिव पाए।
प्रभु अपने.....जय।।

जय हो-जय हो-जय हो-जय हो, जय हो-जय हो-जय॥4॥
है मोहन कूट मुक्तीदायी, श्री पद्म प्रभु जी का भाई।
प्रभु अपने.....जय॥
यहाँ निर्जर कूट भी कहलाए, श्री मुनिसुव्रत जी शिव पाए।
प्रभु अपने.....जय॥
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो, जय हो-जय हो-जय॥5॥
है ललित कूट मंगलकारी, श्री चन्द्रप्रभु का शिवकारी।
प्रभु अपने.....जय॥
श्री आदिनाथ जी कहलाए, जो अष्टापद से शिव पाए।
प्रभु अपने.....जय॥
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो, जय हो-जय हो-जय॥6॥
यहाँ शीतलनाथ जिनेन्द्र कहे, जो विद्युतकूट से मोक्ष गये।
प्रभु अपने.....जय॥
यहाँ कूट स्वयंभू कहलाए, श्री अनन्तनाथ शिव पद पाए।
प्रभु अपने.....जय॥
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो, जय हो-जय हो-जय॥7॥
है धवल कूट शुभ धवल यहाँ, श्री सम्भव जिन शिव पाएँ जहाँ।
प्रभु अपने.....जय॥
श्री वासुपूज्य जी कहलाए, जो चम्पापुर से शिव पाए।
प्रभु अपने.....जय॥
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो, जय हो-जय हो-जय॥8॥
श्री अभिनन्दन जिनराज कहे, जो आनन्द कूट से कर्म क्षये।
प्रभु अपने.....जय॥
प्रभु धर्मनाथ जी कहलाए, जो कूट सुदत्त से शिव पाए।
प्रभु अपने.....जय॥

जय हो-जय हो-जय हो-जय हो, जय हो-जय हो-जय॥9॥
श्री सुमतिनाथ जी कहलाए, जो अविचल कूट से शिव पाए।
प्रभु अपने.....जय॥
श्री कूट कुन्दप्रभ फिर आए, श्री शांतिनाथ मुक्ती पाए।
प्रभु अपने.....जय॥
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो, जय हो-जय हो-जय॥10॥
श्री पावापुर जी कहलाए, श्री वीरप्रभु शिव पद पाए।
प्रभु अपने.....जय॥
यहाँ कूट प्रभास कहा जाए, जिनवर सुपार्श्व शिव पद पाए॥
प्रभु अपने.....जय॥
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो, जय हो-जय हो-जय॥11॥
श्री विमलनाथ जिनवर स्वामी, हुए कूट सुवीर से शिवगामी।
प्रभु अपने.....जय॥
फिर कूट सिद्धवर जी आए, श्री अजितनाथ शिव पद पाए।
प्रभु अपने.....जय॥
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो, जय हो-जय हो-जय॥12॥
श्री नेमिनाथ जी कर्म क्षये, गिरि उर्जयन्त से मोक्ष गये।
प्रभु अपने.....जय॥
है स्वर्णभद्र शुभकर भाई, श्री पार्श्वनाथ का शिवदाई।
प्रभु अपने.....जय॥
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो, जय हो-जय हो-जय॥13॥

दोहा

तीर्थराज की वन्दना, होके भाव विभोर।
करे भाव से जो विशद, बढ़े मोक्ष की ओर॥

तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र पूजा

(स्थापना)

आदिनाथ जी अष्टापद से, वासुपूज्य चम्पापुर धाम।
नेमिनाथ ऊर्जयन्त गिरी अरु, महावीर पावापुर ग्राम॥
गिरि सम्मेद शिखर से मुक्ती, पाए जिन तीर्थंकर बीस।
तीर्थंकर निर्वाण भूमियों, को हम झुका रहे हैं शीश॥
तीन लोकवर्ती जीवों से, जो त्रिकाल हैं पूज्य महान्।
विशद भाव से वंदन करके, उर में करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर-अवतर संवोषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छंद)

जग की माया में फँसकर कई, जीवन व्यर्थ गवाएँ हैं।
श्री जिनेन्द्र वाणी का अमृत, ग्रहण नहीं कर पाए हैं॥
जन्म मृत्यु का रोग मिटे हम, अमृत नीर चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंता ने चिता बना डाला, हम इससे बहुत सताए हैं।
चिंतन से चिंता क्षय होवे, संताप नशाने आए हैं॥
संसार ताप मिट जाए आज, यह चंदन चरण चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं॥2॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय स्वभाव है आतम का, हम भूल उसे पछताए हैं।
हमने अनादि से पाया न, अब उसको पाने आए हैं॥

अक्षय पद मिल जाए हमें, यह अक्षत श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं॥3॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों की गंध मनोहर है, इससे जगती महकाती है।
उस गंध सुगंधी को पाने, जनता सारी ललचाती है॥
हो काम वासना नाश पूर्ण, यह पुष्पित पुष्प चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं॥4॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सदियों से भोजन बहुत किया, पर भूख नहीं मिट पाई है।
प्राणी को बहुत सताती है, यह भूख बहुत दुखदायी है॥
मिट जाए क्षुधा का रोग पूर्ण, यह चरुवर सरस चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं॥5॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान अंधेरा छाया है, सद्ज्ञान दीप न जल पाए।
हो जाय नाश मिथ्यातम का, यह दीप जलाकर हम लाए॥
अज्ञान तिमिर का हो विनाश, यह मनहर दीप जलाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं॥6॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों की माया से, हम सदा सताते आए हैं।
आठों अंगों को बाँध रखा, हम उनसे छूट न पाए हैं॥
हो अष्ट कर्म का नाश शीघ्र, अग्नी में धूप जलाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं॥7॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो किए पूर्व में कर्म कई, वे सभी उदय में आते हैं।
फल उनका शुभ या अशुभ सभी, प्राणी इस जग के पाते हैं॥
अब मोक्ष महाफल पाने को, यह श्रीफल सरस चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य श्रेष्ठ, यह शुद्ध बनाकर लाए हैं।
अष्टम वसुधा है सिद्ध भूमि, हम उसको पाने आए हैं॥
अब पद अनर्घ पाने हेतू, यह मनहर अर्घ्य चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने अनर्घ पद प्राप्ताय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– पूज्य क्षेत्र निर्वाण हैं, तीन लोक में श्रेष्ठ।
जयमाला गाते परम, जिनकी यहाँ यथेष्ठ॥

तर्ज– श्री निर्वाण क्षेत्र में जाय, वंदन कर प्राणी फल पाय।
महासुख दाय, जय-जय तीर्थ परम पद दाय॥
श्री सम्मेद शिखर मनहार, सर्व लोक में मंगलकार।
बृहस्पति भी महिमा को गाय, फिर भी पूर्ण नहीं कर पाय॥
महासुखदाय...॥1॥

यह तीर्थ है अतिशयवान, बीस जिनेन्द्र पाए निर्वाण।
कर्म नाशकर छोड़ी काय, तीन योग से जिनको ध्याय॥
महासुखदाय...॥2॥

आदिनाथ अष्टापद धाम, तीर्थ क्षेत्र को करूँ प्रणाम।
चरण कमल में शीश झुकाए, तीन योग से जिनको ध्याय॥
महासुखदाय...॥3॥

प्रथम जिनेश्वर आदिनाथ, तिनके चरण झुकाऊँ माथ।
मन में यही भावना भाय, वह भी मुक्ति वधु को पाय॥
महासुखदाय...॥4॥

वासुपूज्य चंपापुर धाम, कर्मों से पाए विश्राम।
देव सभी चरणों में आय, भक्ती करके हर्ष मनाय॥
महासुखदाय...॥5॥

चंपापुर है तीर्थ महान्, पाए प्रभो! पञ्चकल्याण।
सभी तीर्थ चम्पापुर जाय, अनुपम यह महिमा दिखलाय॥
महासुखदाय...॥6॥

ऊर्जयंत गिरि रही महान्, नेमिनाथ पाए निर्वाण।
पञ्चम टोंक पे ध्यान लगाय, अपने सारे कर्म नशाय॥
महासुखदाय...॥7॥

शम्भू आदिक अन्य मुनीश, सिद्ध बने शिवपुर के ईश।
महिमा जिसकी कही न जाय, सिद्ध सुपद पाए जिनराय॥
महासुखदाय...॥8॥

पावापुर है तीर्थ महान्, महावीर पाए निर्वाण।
पद्म सरोवर पुष्प खिलाय, सारा तीर्थ रहा महकाय॥
महासुखदाय...॥9॥

महिमा जिसकी अपरंपार, करो वंदना बारबार।
इस जीवन को सुखी बनाय, अनुक्रम से मुक्ती को पाय॥
महासुखदाय...॥10॥

पांचों तीर्थक्षेत्र निर्वाण, तीर्थंकर के रहे महान्।
भव्य जीव वंदन को जाय, मन में अतिशय हर्ष मनाय॥
महासुखदाय...॥11॥

बोल रहे हम जय-जयकार, हम भी पा जावें भव पार।
अंतिम 'विशद' भावना भाय, कथन किया मन से हर्षाय॥
महासुखदाय...॥12॥

दोहा– पाप क्षीणकर पुण्य से, मिले तीर्थ का योग।
अंतिम मुक्ती वास हो, वंदन करूँ त्रियोग॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– है अंतिम यह भावना, होय समाधीवास।
तीर्थक्षेत्र निर्वाण से, पाऊँ ज्ञान प्रकाश॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री आदिनाथ जी की टोंक

श्री कैलाश सिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥
सोरठा– आदिनाथ निर्वाण, अष्टापद से पाए हैं।
काल दोष यह मान, मोक्ष हुआ जो वहाँ से॥
हे ज्ञानमूर्ति करुणा निधान! हे धर्म दिवाकर करुणाकर!।
हे तेज पुंज! हे तपोमूर्ति! सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर!॥
हे धर्म प्रवर्तक! आदिनाथ, तव चरणों में करते वंदन।
हम अष्ट गुणों को पा जाएँ, प्रभु भाव सहित करते अर्चन।
हम भव सागर में भटक रहे, अब तो मेरा उद्धार करो।
श्री वीतराग सर्वज्ञ महाप्रभु, भव समुद्र से पार करो॥
चलो-चलो रे-2 सभी नर-नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥

ॐ ह्रीं अष्टापद सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आदिनाथ सृष्टी के कर्त्ता, हुए लोक में मंगलकार।
स्वयं बुद्ध हे नाथ! आपके, चरणों वन्दन बारम्बार॥
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥2॥
दोहा– आदिम तीर्थंकर हुए, भक्तों के भगवान।
अष्टापद से शिव गये, करके जग कल्याण॥

ॐ ह्रीं श्री कैलाश सिद्धक्षेत्र स्थित कूट से माघ सुदी चौदस को श्री आदिनाथ तीर्थंकरादि व असंख्यात मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्त्ये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इसी कूट से प्रथम तीर्थंकर, मोक्ष जाएँगे और गये।
हुण्डकाल में अष्टापद से, आदिनाथ जिन कर्म क्षये॥
दश हजार मुनि वृषभनाथ के, साथ में मुक्ती पद पाए।
आदिनाथ आदिक मुनियों की, पूजा करने हम आए॥3॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्रादि दशसहस्त्र मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अजितनाथजी की टोंक (सिद्धवर कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥
सोरठा– कूट सिद्धवर जान, अजितनाथ भगवान की।
इन्द्र किए गुणगान, पाया था निर्वाण जब॥
अजितनाथ का साथ मिला है, तब से जीवन चमन खिला है।
श्रद्धा का उपवन महका है, संयम से जीवन चहका है॥
चहका है जीवन विशद संयम, के बढ़े हम मार्ग पर।
शुभ जिंदगी की हर घड़ी अरु, सार्थक हो श्वास हर॥
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥

ॐ ह्रीं निर्वाण कल्याणकमण्डित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अजितनाथ हैं कर्मजयी, तुमने कर्मों का नाश किया।
पाकर के केवलज्ञान प्रभू, इस जग में ज्ञान प्रकाश किया॥
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं॥2॥
दोहा– रहे अपावन भक्त हम, पावन हो प्रभु आप।
अजितनाथ का दर्श कर, कट जाते हैं पाप॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सिद्धवर कूट से श्री अजितनाथ तीर्थंकरादि एक अरब अस्सी करोड़ चौवन लाख मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक अरब चौरासी कोटी, लाख पैंतालिस जिन मुनिवर।
की पद रज पा धन्य हुआ है, कूट सिद्धवर श्री गिरवर॥
फल उपवास कोटि बत्तिस का, तीर्थ वन्दना किए मिले।
जिन पूजा वन्दन करने से, जिन जीवों का हृदय खिले॥3॥

ॐ ह्रीं श्री एक अरब चतुरशीति कोडी पंचचत्वारिंशत् लक्ष मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

श्री संभवनाथ जी की टोंक (धवल कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥
सोरठा–संभवनाथ जिनेन्द्र, मोक्ष महल में जा बसे।
आये तब शत् इन्द्र, पूजन करने प्रभु की॥
धवल कूट से मोक्ष पधारे, अपने कर्म नाश कर सारे।
शत् इन्द्रों ने चरणों आकर, भक्ति गान किया है मनहर॥
करके सुशक्तिमान प्रभु की, चरण का वंदन किया।
लेकर मनोहर द्रव्य आठों, भाव से अर्चन किया॥
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणक मण्डित श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

हे सम्भव! जिन सम्भव कर दो, हमको शिवपुर मार्ग अहा
जो पद पाया है प्रभु तुमने, वह पाने का मम् लक्ष्य रहा॥
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥2॥
दोहा– सम्भव जिन सम्भाव से, किये कर्म का नाश।
भ्रमण नाश मम हो प्रभु, हो शिवपुर में वास॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित धवल कूट से श्री सम्भवनाथ तीर्थंकरादि नौ कोड़ा-कोड़ी बहत्तर लाख ब्यालीस हजार पाँच सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव कोड़ा-कोड़ी बहत्तर, लाख सहस ब्यालीस प्रमाण।
शतक पाँच सौ अधिक मुनीश्वर, का हम करते हैं गुणगान॥
धवल कूट की श्रेष्ठ वन्दना, का फल है ब्यालिस उपवास।
भक्ति भाव से पूजा करके, प्राणी पाते शिवपुर वास॥3॥

ॐ ह्रीं संभवनाथ जिनेन्द्रादि नव कोडाकोडी द्वासप्तति द्विचत्वारिंशत् सहस्र पंचशतक मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अभिनंदननाथजी की टोंक (आनन्द कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥
सोरठा– आनंद कूट महान्, अभिनंदन जिनराज की।
बंदर है पहिचान, अतिशय जिन का है बड़ा॥
श्री जिनेन्द्र का वंदन करते, अपनी कर्म कालिमा हरते।
जागे अब सौभाग्य हमारा, मिले चरण का मुझे सहारा॥
मिल जाए हमको नाथ पावन, चरण की अनुपम शरण।
हम भक्ति से करते हैं भगवन्, चरण में शत्-शत् नमन्॥
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

हे अभिनन्दन! आनन्द धाम, आनन्द कूट से शिव पाए।
आनन्द प्राप्त करने प्रभु जी, हम भी तव चरणों में आए॥
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं॥
दोहा– अभिनंदन तव चरण में, वन्दन मेरा त्रिकाल।
भक्त आपको पूजकर, होते मालामाल॥2॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित आनन्द कूट से श्री अभिनन्दन तीर्थंकरादि बहत्तर कोड़ा-कोड़ी सत्तर करोड़ सत्तर लाख ब्यालीस हजार सात सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोड़ा-कोड़ी रहे बहत्तर, सत्तर कोटी सत्तर लाख।
सहस ब्यालिस सप्तशतक मुनि, भक्त करें जिन पर अनुराग॥
कूटानन्द का वन्दन करके, जीवों में होता आनन्द।
पूजा करके भक्ति भाव से, हो जाते प्राणी निर्द्वन्द॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्रादि द्वासप्तति कोडाकोडी सप्तति कोडी सप्तति लक्ष द्विचत्वारिंशत् सहस्र सप्तशतक मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीसुमतिनाथजी की टोंक (अविचल कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥

सोरठा– आनंद कूट महान्, अभिनंदन जिनराज की।
बंदर है पहिचान, अतिशय जिन का है बड़ा॥

श्री जिनेन्द्र का वंदन करते, अपनी कर्म कालिमा हरते।
जागे अब सौभाग्य हमारा, मिले चरण का मुझे सहारा॥
मिल जाए हमको नाथ पावन, चरण की अनुपम शरण।
हम भक्ति से करते हैं भगवन्, चरण में शत्-शत् नमन्॥
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

हे सुमतिनाथ! तुमने जग को, शुभमति दे शिवपद दान किया।
भक्तों को तुमने करुणायुत, होकर सौभाग्य प्रदान किया॥
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं॥2॥

दोहा– कुमति विनाशक आप हो, सुमति नाथ भगवान।
हमको भी हे नाथ! अब, कर दो सुमति प्रदान॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित अविचल कूट से श्री सुमतिनाथ तीर्थंकरादि एक कोड़ा-कोड़ी चौरासी करोड़ बहत्तर लाख, इक्यासी हजार सात सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोड़ा-कोड़ी रहे बहत्तर, सत्तर कोटी सत्तर लाख।
सहस ब्यालिस सप्तशतक मुनि, भक्त करें जिन पर अनुराग॥
कूटानन्द का वन्दन करके, जीवों में होता आनन्द।
पूजा करके भक्ति भाव से, हो जाते प्राणी निर्द्वन्द॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्रादि द्वासप्तति कोडाकोडी सप्तति कोडी सप्तति लक्ष द्विचत्वारिंशत् सहस्र सप्तशतक मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पदमप्रभुजी की टोंक (मोहन कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥

सोरठा– मोहन कूट प्रसिद्ध, है तीनों ही लोक में।
हुए जिनेश्वर सिद्ध, पद्मप्रभु जी जहाँ से॥

हे त्याग मूर्ति! करुणा निधान! हे धर्म दिवाकर तीर्थंकर!।
हे ज्ञान सुधाकर तेज पुंज!, सन्मार्ग दिवाकर करुणाकर!॥
हे परमब्रह्म! हे पद्मप्रभु! हे भूप! श्री धर के नंदन!।
हम अष्ट द्रव्य से करते हैं प्रभु, भाव सहित उर से अर्चन॥
हे नाथ! हमारे अंतर में, आकर के धीर बंधा जाओ।
हम भूल भटके भक्तों को, प्रभुवर सन्मार्ग दिखा जाओ॥
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्श ज्ञान चारित्र पद्मप्रभु, पाकर पाये केवलज्ञान।
कर्म कालिमा को विनाशकर, पाया शिवपुर में स्थान॥

चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।2।।

दोहा– पद्म प्रभु के दर्श से, होता है अति हर्ष।
सद्गुण का भवि जीव के, होता है उत्कर्ष।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशखिर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित मोहन कूट से श्री पदमप्रभु तीर्थंकरादि निन्यानवे कोड़ा-कोड़ी सत्तासीलाख तियालीस हजार सात सौ, सत्ताईस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोड़ि निन्यानवे लाख सतासी, मुनिवर तैंतालिस हज्जार।
सात सौ सत्तावन भी जानों, मुक्ती पाए मंगलकार।।
सुविधिनाथ अरु मुनिसुव्रत के, मध्य रहा यह कूट महान।
श्यामवर्ण के चरणा शोभते, मोहनकूट है जिसका नाम।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्रादि नवनवति कोडी सप्ताशीलि लक्ष त्रिचत्वारिंशत् सहस्र सप्त शतक सप्तनवति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्वनाथजी की टोंक (प्रभास कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा– पावन कूट प्रभास, जिन सुपार्श्व का जानिए।
पाए मुक्तिवास, योग रोध करके सभी।।

जन्म बनारस नगरी पाया, हरित रंग थी जिनकी काया।
मन में जब वैराग्य समाया, छोड़ चले सब जग की माया।।
माया जगत् में कर्म का, बंधन कराती है अरे।
यह कर्म उसको न बंधे, जो धर्म का पालन करे।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर सुपार्श्व ने संयम धर, निज को निहाल कर डाला है।
प्रभु के चरणाम्बुज का दर्शन, शुभ शिव पद देने वाला है।।

हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

दोहा– जिसने सुपार्श्व का भाव से, किया 'विशद' गुणगान।
अल्प समय में जीव वह, होवें प्रभु समान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित प्रभास कूट से श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकरादि उनचास कोड़ा-कोड़ी चौरासी करोड़ बहत्तर लाख सात हजार सात सौ ब्यालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उनन्चास कोड़ा कोड़ी अरु, कोड़ि चुरासी जैन मुनीश।
लाख बहत्तर शतक सात अरु, सप्त शतक ब्यालीश ऋषीश।।
फल उपवास बत्तिस कोड़ी का, किए वन्दना होवे प्राप्त।
अनुक्रम से शिव पथ के राही, बनकर के होते हैं आप्त।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि एकोनपंचाशत कोडाकोडी चतुरशीति कोडी द्वासप्तति लक्ष सप्त सहस्र सप्तशतक द्विचरवारिंशद मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्व. स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभजी की टोक (ललित कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा– ललित कूट है श्रेष्ठ, जिसकी पूजा हम करें।
पाए धर्म यथेष्ठ, चन्द्रप्रभु जिनदेव जी।।

हे चन्द्रप्रभो! हे चन्द्रानन!, महिमा महान् मंगलकारी।
तुम चिदानंद आनंद कंद, दुःख द्वंद फंद संकटहारी।।
हे वीतराग! जिनराज परम, हे परमेश्वर! जग के त्राता।
हे मोक्ष महल के अधिनायक!, हे स्वर्ग मोक्ष सुख के दाता!।।
मेरे मन के इस मंदिर में, हे नाथ! कृपाकर आ जाओ।
हम पूजन करते भाव सहित, मुझको सद्राह दिखा जाओ।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री चन्द्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र कान्ति सम चन्द्रनाथ जी, शोभित होते आभावान।
ललित कूट से मुक्ती पाए, शिवपुर दाता हैं भगवान॥
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करते आज यहाँ, पर बहुत दूर से आए हैं॥2॥

दोहा– उज्ज्वल गुण धरचन्द्र प्रभु, उज्ज्वलता के कोष।
सर्व कर्म क्षय कर हुए, प्रभू आप निर्दोष॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित ललित कूट से श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकरादि नौ सौ चौरासी अरब बहत्तर करोड़ अस्सी लाख चौरासी हजार पाँच सौ पचानवे मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरब रहे नौ सौ चौरासी, द्वादश कोड़ि असीती लाख।
सहस चुरासी पाँच सौ पंचानवे, मुनिवर कीन्हे कर्म विनाश॥
छियानवे लाख उपवासों का फल, वन्दन करके पाते जीव।
मोक्षमार्ग पर बढ़ने हेतू, प्राप्त करें सब पुण्य अतीव॥3॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रनाथ जिनेन्द्रादि नव खरब चतुरशीति अरब द्वादश कोडी अशीति लक्ष चतुरशीति सहस्र पंचशतक पंच नवति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीपुष्पदंतजी की टोंक (सुप्रभ कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥

सोरठा– सुप्रभ कूट महान्, तीनो लोक में।
मुक्ति का स्थान, पुष्पदन्त भगवान का॥

सम्मेदाचल पर्वत जग में न्यारा, सब जीवों का तारण हारा।
महिमा जिसकी अतिशयकारी, तीन लोक में मंगलकारी।
हैं मिष्ठ वचन मोदक जैसे, दीपक सम ज्ञान प्रकाश रहा।
यह धूप समान सुविकसित कर, फल श्रीफल जैसा सुफल अहा।
अपने मन के शुभ भावों का, यह चरणों अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हम परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशदभाव से ध्याते हैं॥

चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदंत जिनराज आपका, दिनकर सा है रूप महान्।
रत्नत्रय को पाकर स्वामी, किया आपने निज कल्याण॥
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥2॥

दोहा– पुष्पदन्त जिन आप हैं, अविनाशी अविकार।
चरण वन्दना कर रहे, हे प्रभु! बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुप्रभ कूट से श्री पुष्पदंत तीर्थंकरादि एक कोड़ा-कोड़ी निन्यानवे लाख सात हजार चार सौ अस्सी मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

कोटा कोटी एक निन्यानवे, लाख सप्त हज्जार प्रमाण।
सात सौ अस्सी सुप्रभ कूट से, मुनिवर पाए पद निर्वाण॥
एक कोटि प्रोषध का फल है, प्राणी पाते हैं शुभकार।
श्री जिनवर जिनमुनियों के पद, वन्दन मेरा बारम्बार॥3॥

ॐ ह्रीं श्री सुविधिनाथ जिनेन्द्रादि एक कोडाकोडी नवनवति लक्ष सप्त सहस्र सप्त शतक अशीति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शीतलनाथजी की टोंक

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥

सोरठा– मोक्ष गए तीर्थेश, श्री अनंत जिनवर परम।
दिए परम उपदेश, मोक्ष मार्ग जिनधर्म का॥

कूट स्वयंभू है मनहारी, जिन तीर्थों में अतिशयकारी।
बैठ वहाँ प्रभु ध्यान लगाए, वह भी मुक्ति वधु को पाए॥
पाए स्वयं वह मोक्ष लक्ष्मी, शिवपुरी में वास हो।
हम भावना भाते सभी का, धर्म में विश्वास हो॥

हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन से भी अति शीतल, श्री शीतल नाथ कहाए हैं।
हे नाथ! आपके चरण शरण, शीतलता पाने आए हैं॥
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥2॥

दोहा– शीतलता इस भक्त को, कर दो 'विशद' प्रदान।
शिव नगरी के ईश तुम, दो शिव पद का दान॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित विद्युतवर कूट से श्री शीतलनाथ तीर्थंकरादि अठारह कोड़ा-कोड़ी बयालीस करोड़ बत्तीस लाख, बयालीस हजार नौ सौ पाँच मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोटा कोटी अठारह ब्यालिस, कोटि लाख बत्तीस प्रमाण।
ब्यालिस हजार नौ सौ बतलाए, पाँच मुनी पाए निर्वाण॥
कूट सुविद्युतवर के वन्दन, से फल हो कोटी उपवास।
अल्प समय में भव्य जीव भी, पा लेते हैं शिवपुर वास॥3॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्रादि अष्टादश कोडाकोडी द्विचत्वारिंशत् कोडी द्वात्रिंशत् लक्ष द्विचत्वारिंशत सहस्त्रनवशतक पंच मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री श्रेयांसनाथजी की टोंक (संकुल कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥

सोरठा– श्रेयश पाया श्रेष्ठ, श्री श्रेयांस तीर्थेश ने।
जिनवर हुए यथेष्ठ, कर्म घातिया नाशकर॥

संकुल कूट बड़ा मनहारी, तीर्थराज ये विस्मयकारी।
मन को आह्लादित कर देवे, दुःखियों के दुःख जो हर लेवे॥
हरता दुखों को जीव के जो, भाव से वंदनकरें।
हो नाश दुख दुर्गति का जो, श्रेष्ठ अभिनंदन करें॥
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व गुणों को पाने वाले, श्रेयनाथ जिन जग के ईश।
स्वर्ग लोक से इन्द्र चरण में, आकर यहाँ झुकाते शीश॥
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥2॥

दोहा– सर्व कर्म को नाशकर, शिवपुर किया प्रयाण।
श्रेयस पाने को 'विशद', करते हम गुणगान॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित संकुल नामक कूट से श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकरादि छियानवे कोड़ा-कोड़ी छियानवे करोड़ छियानवे लाख नौ हजार पाँच सौ बयालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छियानवे कोटा-कोटी छियानवे, कोटी छियानवे लाख प्रमाण।
नौ हजार अरु पाँच सौ ब्यालिस, पाए हैं मुनि पद निर्वाण॥
कोटी प्रोषध का फल पाते, करें वन्दना हो अविकार।
शिव पद पाने हम जिन पद में, करते वन्दन बारम्बार॥3॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्रादि षण्णवति कोडाकोडी षण्णवति कोडी षण्णवति लक्ष नवसहस्त्र पंचशतक द्विचत्वारिंशत् मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य भगवान की टोंक

श्री चंपापुर क्षेत्र की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥

सोरठा– पाए पद निर्वाण, चंपापुर से प्रभु जी।
वासुपूज्य भगवान, कालदोष यह जानिए॥

चम्पापुर नगरी मन भाए, पांचों कल्याणक प्रभु पाए।
बालयति जो प्रथम कहाए, उनकी महिमा कही न जाए॥
महिमा कही न जाय प्रभु की, जो परम मंगल कहे।
उनके गुणों का गान करने, में सफल हम न हरे॥
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

है पूज्य लोक में जैन धर्म, जिन वासुपूज्य अपनाये हैं।
जिसने भी जैन धर्म पाया, वह शिवपदवी को पाये हैं॥
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं॥2॥

दोहा– जगत पूज्यता पा गये, वासुपूज्य भगवान।
चंपापुर में पाए हैं, प्रभु पाँचों कल्याण॥

ॐ ह्रीं श्री चम्पापुर सिद्धक्षेत्र से भादवा सुदी चौदस को श्री वासुपूज्य तीर्थंकरादि व असंख्यात मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

है मन्दर सुर गिर चम्पापुर, श्री वासु पूज्य का मोक्ष स्थान।
एक सहस मुनि वासुपूज्य के, साथ में पाए पद निर्वाण॥
मुक्ती पाए यहाँ से कई मुनि, प्राप्त करेंगे शिव का द्वार।
श्री जिनवर जिन मुनिराजों के, पद में वन्दन बारम्बार॥3॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्रादि एक सहस्र मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विमलनाथजी की टोंक (सुवीर कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥

सोरठा– कूट सुवीर महान्, कहते संकुल कूट भी।
विमलनाथ भगवान, मोक्ष महल में जा बसे॥

विमलनाथ से नाथ नहीं हैं, सर्व लोक में और कहीं हैं।
चरण शरण में जो भी आया, उसने ही सौभाग्य जगाया॥
सौभाग्यशाली वह जहाँ में, प्रभु का वंदन करें।
ले द्रव्य आठों भाव से जिन, चरण का अर्चन करें॥
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं विमलनाथ मल रहित विमल, निर्मलता श्रेष्ठ प्रदान करें।
जो शरणागत बनकर आते, भक्तों का कल्मष पूर्ण हरें॥
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं॥2॥

दोहा– विमलनाथ तव चरण में, पाएँ हम विश्राम।
हमको प्रभु आशीष दो, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुवीर कूट से श्री विमलनाथ तीर्थंकरादि सत्तर कोड़ा-कोड़ी साठ लाख छः हजार सात सौ ब्यालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्तर कोटा-कोटी जानो, साठ लाख ब्यालिस हज्जार।
सात सौ मुनिवर मुक्ती पाए, जिनको वन्दन बारम्बार॥
एक कोटि उपवासों का फल, कूट वन्दना किए मिले।
सम्यक् श्रद्धानी जीवों का, जिन अर्चाकर हृदय खिले॥3॥

ॐ ह्रीं श्री सप्तति कोडाकोडी षष्ठी लक्षषष्ठी सहस्र सप्त शतक एकाशीति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अनन्तनाथजी की टोंक (स्वयंप्रभ कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥
सोरठा– मोक्ष गए तीर्थेश, श्री अनंत जिनवर परम।
दिए परम उपदेश, मोक्ष मार्ग जिनधर्म का॥
कूट स्वयंभू है मनहारी, जिन तीर्थों में अतिशयकारी।
बैठ वहाँ प्रभु ध्यान लगाए, वह भी मुक्ति वधु को पाए॥
पाए स्वयं वह मोक्ष लक्ष्मी, शिवपुरी में वास हो।
हम भावना भाते सभी का, धर्म में विश्वास हो॥
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनन्त के धारी हैं जो, जिन अनन्त है जिनका नाम।
गुण अनन्त पाने को यह जग, करता बारम्बार प्रणाम॥
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥2॥
दोहा– पूज्य हुए इस लोक में, हे अनन्त! जिन आप।
तव गुण पाने के लिए, करूँ नाम का जाप॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित स्वयंप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास श्री अनन्तनाथ तीर्थंकरादि छियानवे कोड़ा-कोड़ी सत्तर करोड़ सत्तर लाख सत्तर हजार सात सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छियानवे कोटा-कोटी सत्तर, कोटी सत्तर लाख प्रमाण।
सत्तर सहस सात सौ मुनिवर, किए यहाँ से मोक्ष प्रयाण॥
कूट स्वयं प्रभु के वन्दन का फल, एक कोटि गाया उपवास।
भव्य जीव जो करें वन्दना, पाएँ वे भी शिवपुर वास॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राद्रि षड्नवति कोडाकोडी सप्तति कोडी सप्तति। लक्ष सप्तति सहस्र सप्त शतक एकाशीति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री धर्मनाथजी की टोंक (सुदत्तवर कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥
सोरठा– कूट सुदत्त महान्, अतिशय कारी तीर्थ पर।
धर्मनाथ भगवान, मोक्ष गए हैं जहाँ से॥
प्रभु ने धर्म ध्वजा फहराई, अनुक्रम से फिर जहाँ से।
अष्ट कर्म का किया सफाया, केवल ज्ञान की है यह माया॥
माया कही यह ज्ञान की, जिसने जगाया है परम।
वह नाश करके भव दुःखों का, लक्ष्य पाया है चरम॥
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

हे धर्म शिरोमणि धर्मनाथ!, तुम धर्म ध्वजा के धारी हो।
तुम मंगलमय हो इस जग में, प्रभु अतिशय मंगलकारी हो॥
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं॥2॥
दोहा– धर्म धुरन्धर धर्मधर, धर्मनाथ भगवान।
जग जीवों को आपने, दिया धर्म का ज्ञान॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित (सुदत्तवर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास) श्री धर्मनाथ तीर्थंकरादि उनतीस कोड़ा-कोड़ी उन्नीस करोड़ नौ लाख नौ हजार सात सौ पंचानवे मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उन्नीस कोटा-कोटी कोटी, उन्निस हैं नव लाख प्रमाण।
नौ हजार सात सौ पंचानवे, मुनिवर पाए मोक्ष प्रयाण।।
स्वयं प्रभ कूट के वन्दन का फल, एक कोटि गाया उपवास।
भव्य जीव जो करें वन्दना, पाएँ वे भी शिवपुर वास।।3।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रादि एकोनविंशति कोडाकोडी एकोनविंशति कोडी नव लक्ष नव सहस्र सप्त शतक एकाशीति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शान्तिनाथजी भगवान की टोंक (कुन्दप्रभ कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा– कूट कुन्दप्रभ जान, शांतिनाथ भगवान की।
मोक्ष गए भगवान, कर्मनाश कर जहाँ से।।

शांतिनाथ शांति के दाता, तीन लोक में आप विधाता।
प्रभु हैं जन-जन के उपकारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।।
सारे जहाँ में आप मंगल, कर रहे सद्धर्म से।
पुण्य का संचय करें, प्राणी सभी सत्कर्म से।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

हे शांतिनाथ! शांती दाता, जन-जन को शांति प्रदान करो।
भवि जीवों के उर में स्वामी, अब 'विशद' भावना आप भरो।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

दोहा– शान्ति का दरिया बहे, शान्तिनाथ के द्वार।
सद्भक्ति से भक्त का, होता बेड़ा पार।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित कुन्दप्रभ कूट से श्री शांतिनाथ तीर्थंकरादि नौ कोड़ा-कोड़ी नौ लाख नौ हजार नौ सौ निन्यानवे मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौ कोटा-कोटी नौ लख और, नौ हजार नौ शतक प्रमाण।
निन्यानवे संख्या मुनियों की, पाए हैं जो पद निर्वाण।।
असंख्यात मुनियों ने गिरि पर, किया बैठकर आतम ध्यान।
एक कोटि प्रोषध का फल हो, करें भाव से जो गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्रादि नव कोडाकोडी नव लक्ष नव सहस्र नव शतक नवनवति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुन्थुनाथजी की टोंक (ज्ञानधर कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा– कुंथुनाथ भगवान, परम ज्ञानधर कूट से।
पाए पद निर्वाण, मुक्त हुए संसार से।।

पावन कूट ज्ञानधर भाई, कुंथुनाथ जिन मुक्ति पाई।
अन्य मुनीश्वर ध्यान लगाए, कर्म नाश कर मोक्ष सिधाए।।
पाए हैं मुक्तिधाम अनुपम, नहीं जिसका अंत है।
अतिशय मनोहर कूट अनुपम, विशद महिमावंत है।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री कुंथनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्थुनाथ त्रय पद के धारी, बनकर कीन्हें कर्म विनाश।
हेकुन्थुनाथ त्रयपद के स्वामी!, किया आपने शिवपुर वास।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।2।।

दोहा– तीन लोक के श्रेष्ठतम, कुन्थुनाथ भगवान।
सारे कर्म विनाश कर, पाया पद निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित ज्ञानधर कूट से श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकरादि छियानवे कोड़ा-कोड़ी छियानवे करोड़ बत्तीस लाख, छियानवे हजार सात सौ बयालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छियानवे कोटा कोटी छियानवे, कोटि बत्तिस लाख प्रमाण।
छियानवे सहस्त्र सात सौ ब्यालिस, किए मुनीश्वर मोक्ष प्रयाण॥
असंख्यात मुनियों ने गिरि पर, किया बैठकर आतम ध्यान।
एक कोटि प्रोषध का फल हो, करें भाव से जो गुणगान॥3॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्रादि षड्नवति कोडाकोडी षड्नवति कोडी द्वात्रिंशत् लक्ष षड्नवति सहस्त्रसप्तशतक द्विचत्वारिंशत् मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अरहनाथजी की टोंक (नाटक कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥
सोरठा– तीन पदों के साथ, मुक्त हुए संसार से।
चरण झुकाऊँ माथ, अरहनाथ भगवान को॥
नाटक कूट नाम है भाई, जहाँ से प्रभु ने मुक्ति पाई।
हम भी मुक्ति पाने आए, भक्ति भाव से शीश झुकाए॥
चरणों झुकाकर शीश हम, प्रभु कर रहे हैं अर्चना।
ले द्रव्य आठों थाल में शुभ, कर रहे हैं वंदना॥
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इस संसार सरोवर का कहीं, छोर नजर न आता है।
वियोग आपसे हे अर जिन! अब, और सहा न जाता है॥
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं॥2॥

दोहा– कर्मारिनाशे सभी, अरहनाथ भगवान।
त्रय पद के धारी हुए, शिवपुर किया प्रयाण॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित नाटक कूट से श्री अरहनाथ तीर्थंकरादि निन्यानवे करोड़ निन्याननवे लाख निन्यानवे हजार नौ सौ निन्यानवे मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोटि निन्यानवे लाख निन्यानवे और निन्यानवे सहस मुनीश।
नौ सौ अरु निन्यानवे मुनि पद, झुका रहे हम अपना शीश॥
नाटक कूट की किए वन्दना, लाख छयानवे का उपवास।
पाते हैं इस जग के प्राणी, पाएँ अन्त में मुक्ती वास॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्रादि नवनवतिकोडी नवनवति लक्ष नवनवति सहस्त्र नवनवतिशतक नवनवति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मल्लिनाथजी की टोंक (संबल कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥
सोरठा– मल्लिनाथ भगवान, अष्ट कर्म को जीतकर।
पाया पद निर्वाण, शिव नगरी में जा बसे॥
संवलकूट श्रेष्ठ मन भाया, मल्लिनाथ ने ध्यान लगाया।
आठों कर्म नाशकर भाई, अष्ट गुणों की सिद्धि पाई॥
सिद्धि प्रभु ने प्राप्त करके, सिद्ध जिन को भी अहा।
अर्हन्त पद के साथ में अब, सिद्ध जिन को भी कहा॥
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मल्लिनाथ की महिमा का, कोई भी पार नहीं पाए।
गुण गाथा कौन कहे स्वामी, कहने वाला भी थक जाए॥

चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ, पर बहुत दूर से आए हैं।।2।।
दोहा– जीते काम कषाय को, बने श्री के नाथ।
शिवपुर के राही बने, जग में मल्लिनाथ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशखिर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित संबल कूट से श्री मल्लिनाथ तीर्थंकरादि छियानवे करोड़ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोटि छियानवे मुनी ध्यान कर, किए पूर्णतः कर्म विनाश।
अनन्त चतुष्टय पाने वाले, पाए केवल ज्ञान प्रकाश।।
संबल कूट की किए वन्दना, लाख छियानवे का उपवास।
पाते हैं इस जग के प्राणी, पाएँ अन्त में मुक्ती वास।।3।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्रादि षण्णवति कोटि मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मुनिसुव्रतनाथजी की टोंक (निर्जर कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।
सोरठा– मुनिसुव्रत भगवान, मुक्त हुए हैं कर्म से।
निर्जर कूट महान्, भक्ति करते भाव से।।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करूँ नमन्।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्मावती मां के नंदन।।
मुनिव्रतधारी हे भवतारी! योगीश्वर! जिनवर वंदन।
हम शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, करते हैं प्रभु का अर्चन।
हे जिनेन्द्र! मम् हृदय कमल पर, आना तुम स्वीकार करो।
अब चरण शरण का भक्त बनालो, इतना सा उपकार करो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत मुनिव्रत के धारी, हुए लोक में सर्व महान्।
कर्मदहन कर किया आपने, 'विशद' आत्मा का उत्थान।।

चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।2।।
दोहा– शिवपुर जाके आपने, कीन्हा है विश्राम।
मुनिसुव्रत के पद युगल, करते चरण प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित निर्जर नामक कूट से श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकरादि निन्यानवे कोड़ा-कोड़ी नौ करोड़ निन्यानवे लाख नौ सौ निन्यानवे मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निन्यानवे कोटा-कोटी मुनिवर, कोटि निन्यानवे करके ध्यान।
लाख निन्यानवे नौ सौ निन्यानवे, कर्म नाश पाए निर्वाण।।
एक कोटि उपवासों का फल, किए वन्दना होवे प्राप्त।
आत्म ध्यान कर जग के प्राणी, स्वयं शीघ्र बन जाते आप्त।।3।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्रादि नवनवति कोडाकोडी नवनवति कोडी नवनवति लक्ष नवशतक नवनवति मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नमिनाथजी की टोंक (मित्रधर कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।
सोरठा– नमिनाथ भगवान, श्रेष्ठ मित्रधर कूट से।
पाए पद निर्वाण, मुक्त हुए हैं कर्म से।।
नीलकमल लक्षण के धारी, नमिनाथ जिन मंगलकारी।
प्रभु ने कर्म घातिया नाशे, अतिशय केवल ज्ञान प्रकाशे।।
होकर प्रकाशी ज्ञान के, उपदेश दे सद्ज्ञान का।
मारग बताया आपने, संसार को कल्याण का।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनन्त को पाने वाले, नमीनाथ जी हुए महान्।
निज गुण पाने हेतु आपका, करते हैं हम भी गुणगान॥
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।2॥

दोहा– रत्नत्रय को धारकर, कर्म घातिया नाश।
नमि जिन मुक्ती पा लिए, करके ज्ञान प्रकाश॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित मित्रधर कूट से श्री नमिनाथ तीर्थंकरादि नौ कोड़ा-कोड़ी एक अरब पैंतालीस लाख सात हजार नौ सौ बयालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक अरब नौ कोटा-कोटी, लाख पैंतालिस सात हजार।
नौ सौ ब्यालिस अधिक बताए, हुए मुनीश्वर भव से पार॥
कूट मित्रधर के वन्दन से, एक कोटि का फल उपवास।
रत्नत्रय के धारी पाते, इसी कूट से मुक्ती वास।।3॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्रादि नव शतक कोडाकोडी एक अरब पंचचत्वारिंशत् लक्षसप्तसहस्र द्विचत्वारिंशत् मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथजी की टोंक

श्री गिरनार गिरि की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥

सोरठा– गिरि गिरनार महान्, ऊर्जयन्त भी नाम है।
पाए पद निर्वाण, काल दोष से नेमि जिन॥

नेमिनाथ के चरण कमल में, भव्य जीव आ पाते हैं।
तीर्थंकर जिन के दर्शन से, सर्व कर्म कट जाते हैं॥
गिरि गिरनार के ऊपर श्रीजिन, को हम शीश झुकाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, प्रभु के चरण चढ़ाते हैं॥
राहु अरिष्ट ग्रह शांत करो प्रभु, हमने तुम्हें पुकारा है।
हमको प्रभु भव से पार करो, तुम बिन न कोई हमारा है॥

चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री नेमिनानाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नेमिनाथ! करुणा निधान, सब पर करुणा बरसाते हो।
जो शरणागत बन जाते हैं, उनको भव पार लगाते हो॥
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।2॥

दोहा– राज्य तजा राजुल तजी, छोड़ा सब धन धाम।
गिरनारी से शिव गये, तव पद 'विशद' प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित कूट से आषाढ़ सुदी सातै को श्री नेमिनाथ तीर्थंकरादि व बहत्तर करोड़ सात सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चरण युगल त्रय रहे मनोहर, अजितनाथ की कूट के पास।
अनिरुद्ध शम्भु प्रद्युम्न कृष्णसुत, कीन्हे अपने कर्म विनाश॥
उर्जयन्त से नेमिनाथ जी, कोटि बहत्तर मुनि के साथ।
मुक्ती पाए जिनके चरणों, झुका रहे हम पद में माथ।।3॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र शंबू प्रद्युम्नकुमारादि द्वासप्तति कोडी सप्तशतक मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथजी की टोंक (स्वर्णभद्र कूट)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥

सोरठा– कमठ किया उपसर्ग, बैर जानकर पूर्व का।
पाए जिन अपवर्ग, कर्म नाशकर ध्यान से॥

पावन तीर्थराज है भूपर, गिरि सम्मेद शिखर के ऊपर।
सबसे ऊँची टोंक रही है, महिमा जिसकी अगम कही है॥

महिमा अगम है जिन प्रभू की, तीर्थ की भी जानिए।
जो दुःखहर्ता सौख्यकर्त्ता, मोक्षदायी मानिए॥
हम शरण में आए प्रभू यह, वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो॥
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उपसर्गों में संघर्षों में, तुमने समता को धारा है।
कर्मों का शत्रू दल आगे, हे पार्श्व! आपके हारा है॥
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं॥2॥

दोहा– ध्यान लीन होकर प्रभु, सुतप किया दिन रैन।
समता धर पार्श्व जिन, हुए नहीं बैचेन॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित स्वर्णभद्र कूट से श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकरादि ब्यासी करोड़ चौरासी लाख पैंतालीस हजार सात सौ ब्यालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोटि ब्यासी लाख चुरासी, मुनिवर पैंतालिस हज्जार।
सात सौ ब्यालिस मुनी कर्म का, नाश किए पाए भव पार॥
सोलह कोटि उपवासों का, फल पाते हैं इस जग के जीव।
किए वन्दना जिन चरणों की, प्राप्त करें सब पुण्य अतीव॥3॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि द्वयशीति कोडी चतुरशीति लक्ष पंचचत्वारिंशत् सप्तशतक द्विचत्वारिंशत् मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर स्वामी की टोंक

श्री पावापुर क्षेत्र की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो॥

सोरठा– पाए पद निर्वाण, पद्म सरोवर से प्रभु।
महावीर भगवान, काल दोष यह मानिए॥

हे वीर प्रभो! महावीर प्रभो!, हमको सद्राह दिखा जाओ।
यह भक्त खड़ा है आश लिये, प्रभु आशिष दो उर में आओ।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, हम पूजा करने को आए।
हम भक्ति भाव से हे भगवन्! यह भाव सुमन कर में लाए।
हे नाथ! आपके द्वारे पर, हम आये हैं विश्वास लिए।
शुभ अर्घ्य समर्पित करते हैं, यह भक्त खड़े अरदास लिए।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को॥1॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकमण्डित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तत्त्वों का सार दिया तुमने, जग को सन्मार्ग दिखाया है।
प्रभु दर्शन करके मन मेरा, गद्गद् होकर हर्षाया है॥
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं॥2॥

दोहा– महावीर हे वीर! जिन, सन्मति हे अतिवीर!
वर्धमान पावापुरी, से पाए भव तीर॥

ॐ ह्रीं श्री पावापुर सिद्धक्षेत्र से कार्तिक वदी अमावस को श्री वर्द्धमान तीर्थंकरादि व असंख्यात मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणाविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिनाथ का कूँट जहाँ है, कूट वीर का उसके पास।
ध्यान साधना करके पाए, कई मुनीश्वर मुक्ती वास॥
पावापुर के पदम सरोवर, से छत्तीस मुनियों के साथ।
मुक्ती पाए जिनके चरणों, झुका रहे हम अपना माथ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्रादि छत्तीस मुनीश्वरेभ्यो नमः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय जाप्य– ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रभ्यो नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा– सम्मेदाचल तीर्थ अरु, तीर्थक्षेत्र निर्वाण।
जयमाला गाते विशद, जिनकी यहाँ महान॥

कण-कण पावन जिसका सारा, मंगलमय है तीर्थ हमारा।
श्री सम्मेद शिखर है प्यारा, सब मिलकर बोलो जयकारा।टेक॥

सब मिल दर्शन करवा जी, भाव से वंदन करवा जी।
यह अनादि है तीर्थ जहाँ पर, मोक्ष गये हैं बीस जिनेश्वर।
संख्यातीत यहाँ से मुनिवर, मुक्ती पाए कर्म नाशकर।
जन्म मरण से हो छुटकारा, सब मिलकर बोलो जयकारा॥
जो भी वंदन करने जाते, भूत प्रेत उनसे घबड़ाते।
मन वांछित फल प्राणी पाते, उनके सब संकट कट जाते।
अशुभ गति न होय दुबारा, सब मिल...॥1॥
भव्यों को दर्शन मिलते हैं, जीवन के उपवन खिलते हैं।
भाव सहित वंदन करते हैं, चरणों का अर्चन करते हैं॥
पाप मिटे वंदन के द्वारा, सब मिल...॥
सुर नर मुनि गणधर भी आते, अपना सब सौभाग्य जगाते।
सिद्ध क्षेत्र पर ध्यान लगाते, सर्व सिद्धियाँ वे पा जाते॥
गूँजे जैन धर्म का नारा, सब मिल....॥2॥
सिद्ध सुखों के सुर अभिलाषी, जिनकी चिर आकांक्षा प्यासी।
बिखरी छटा जहाँ मनहारी, जीवों को हैं मंगलकारी॥
वातावरण सुखद है सारा, सब मिल...॥3॥
संयम का सौभाग्य जगाते, मानव सकल व्रतों को पाते।
निज आतम का ध्यान लगाते, श्रावक श्रद्धा ज्ञान जगाते।
भव सागर से हो निस्तारा, सब मिल...॥4॥
आओ मिलकर सब जन आओ, वंदन करके पुण्य कमाओ।
जिन सिद्धों को हम सब ध्याएँ, हम भी सिद्ध स्वयं बन जाएँ॥
नहीं और है कोई चारा, सब मिल...॥5॥

इन्द्र देव ने स्वयं उतरकर, चरण उकेरे हैं पर्वत पर।
अतिशयकारी पुण्य कमाया, जिनकी महिमा को दिखलाया॥
महिमा प्रभु की अपरंपारा, सब मिल...॥6॥
यात्री जो वंदन को आते, त्याग हेतु प्रेरित हो जाते।
पद चिन्हों का वंदन पाते, अपने सारे दोष नशाते॥
मंगलमय जीवन हो सारा, सब मिल...॥7॥
कल-कल बहता शीतल नाला, अतिशयकारी महिमा वाला।
चारों तरफ रही हरियाली, वायू चलती है मनहारी॥
भक्त बोलते हैं जयकारा, सब मिल...॥8॥
सांवलिया पारस की जय हो, सारे कर्मों का भी क्षय हो।
डोली वाले देते नारे, बोल रहे हैं जय-जयकारे॥
गूंज रहा है पर्वत सारा, सब मिल...॥9॥
चौबिस तीर्थंकर की जय हो, जैन धर्म परिकर की जय हो।
दुखहारी गिरवर की जय हो, श्री सम्मेद शिखर की जय हो॥
मुक्ती पाना लक्ष्य हमारा, सब मिल...॥10॥
आदिनाथ अष्टापद जानो, वासुपूज्य चम्पापुर मानो।
नेमिनाथ गिरनार सिधाएँ, वीर प्रभु पावापुर गाए॥
मोक्ष महल पाए हैं प्यारा, सब मिल...॥11॥

छंद-घत्तानंद

है पूज्य हमारा, पर्वत सारा, सम्मेदाचल तीर्थ महा।
कण-कण है पावन, अति मन भावन, हम पूज रहे हैं नाथ अहा॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– रज कण पूजें देव नर, भक्तिभाव के साथ।
भव्य भावना से 'विशद', झुका रहे हैं माथ॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

निर्वाण काण्ड

दोहा– वीतराग जिनके चरण, वन्दन करके आज।
'विशद' काण्ड निर्वाण यह, गाए सकल समाज॥

(शम्भू छंद)

अष्टापद से आदिनाथजी, वासुपूज्य चम्पापुर धाम।
नेमिनाथ गिरनार गिरी से, महावीर पावापुर ग्राम॥1॥
गिरि सम्मेद शिखर से मुक्ती, पाए जिन तीर्थंकर बीस।
भूत भविष्यत के तीर्थंकर, के पद झुका रहे हम शीश॥2॥
मुनि वरदत्त इन्द्र ऋषिवर जी, सायरदत्त हुए गुणवान।
आठ कोटि मुनि नगर तारवर, से पाए हैं पद निर्वाण॥3॥
कोटि बहत्तर और सात मुनि, शम्बु प्रद्युम्न अनिरुद्ध कुमार।
श्री गिरनार गिरि पर जाकर, पाए हैं मुक्ति पद सार॥4॥
रामचन्द्र के सुत लव कुश द्वय, लाड नरेन्द्र आदि गुणवान।
पाँच कोटि मुनि मुक्ती पाए, पावागिरि मुक्ती स्थान॥5॥
द्रविड़ राज औ तीन पाण्डव, आठ कोटि मुनि और महान।
श्री शत्रुञ्जय गिरि के ऊपर, से पद पाए हैं निर्वाण॥6॥
श्री भलभद्र मुक्ति पाए हैं, आठ कोटि मुनियों के साथ।
श्री गजपंथ शिखर है पावन, तिन पद झुका रहे हम साथ॥7॥
राम हनू सुग्रीव नील अरु, गय गवाख्य महानील सुडील।
कोटि निन्यानवे तुंगीगिरि से, मुक्ती पाकर पाए शील॥8॥
नंग कुमार अनंग मुनीश्वर, साड़े पाँच कोटि मुनिराज।
ध्यान लाकर सोनागिरि के, शीश से पाए मुक्ती राज॥9॥
रेवातट से मुक्ती पाए, रावण के सुत आदि कुमार।
साढ़े पाँच कोटि मुनि पाए, कर्म नाश कर भव से पार॥10॥
चक्रवर्ति दो कामदेव दश, आठ कोटि मुनियों के साथ।
कूट सिद्धवर रेवातट को, झुका रहे हम अपना माथ॥11॥
अचलापुर ईशान दिशा में, मेढ़गिरि जानो शुभकार।
साढ़े तीन कोटि मुनिवर जी, पाए हैं भवदधि से पार॥12॥

वंशस्थल के पश्चिम दिश में, कुन्थलगिरि है तीर्थ स्थान।
कुलभूषण अरु देशभूषण जी, पाए वहाँ से पद निर्वाण॥13॥
मुनी पाँच सौ जसरथ नृप सुत, कलिंग देश में हुए महान।
कोटि शिला से कोटि मुनीश्वर, पाए अनुपम पद निर्वाण॥14॥
समवशरण में पार्श्व प्रभु के, वरदत्तादी पंच ऋशीष।
मोक्ष गये रेसिन्दी गिरि से, तिनको झुका रहे हम शीश॥15॥
जो-जो मुनि मुक्ती पाए हैं, भरत क्षेत्र के जिस स्थान।
तीन योग से वन्दन मेरा, हो जयवन्त भूमि निर्वाण॥16
बड़वानी वर नगर पास में, दक्षिण दिशा रही मनहार।
चूलगिरि से इन्द्रजीत मुनि, कुम्भकरण पाए भव पार॥17॥
पावागिरि के पास चेलना, नदी शोभती अपरम्पार।
मुनिवर चार स्वर्ण भद्रादि, शिवपद का पाए हैं सार॥18॥
फलहोड़ी के पश्चिम दिश में, द्रोणागिरि है शिखर महान।
गुरुदत्तादि अन्य मुनीश्वर, वहाँ से पाए पद निर्वाण॥19॥
बाली और महाबाली मुनि, नाग कुमार भी उनके साथ।
अष्टापद से मुक्ती पाए, उनको झुका रहे हम माथ॥20॥
पार्श्वनाथ जिनवर नागद्रह में, अभिनंदन मंगलपुर धाम।
पट्टन आशारम्य में श्री जिन, मुनिसुव्रत के चरण प्रणाम॥21॥
पोदनपुर में बाहुबलिजी, शांति कुन्थु अर गजपुर ग्राम।
पार्श्व सुपारस जन्म लिए वह, नगर बनारस पूज्य महान॥22॥
मथुरा नगर में वीर प्रभु जी, अहिक्षेत्र में प्रभु जी पारसनाथ।
जम्बू वन में जम्बू मुनि के, चरणों झुका रहे हम माथ॥23॥
पञ्च कल्याणक श्रेष्ठ भूमियाँ, मध्यलोक में रही महान।
मन-वच-तन की शुद्धीपूर्वक, नमन सहित करते गुणगान॥24॥
अर्गल देव श्रीवर नगरी, निकट कुण्डली रहे जिनेश।
शिरपुर में श्री पार्श्वनाथ जी, लोहागिरि शंख देव विशेष॥25॥
सवा पाँच सौ धनुष तुंग तन, केसर कुसुम वृष्टि कर देव।
गोमटेश के पद में वन्दन, शिव सुख पाने करें सदैव॥26॥
अतिशय क्षेत्र हैं अतिशयकारी, तथा रहे निर्वाण स्थान।
शीश झुकाकर वन्दन मेरा, सब तीर्थों को रहा महान॥27॥

तीन काल निर्वाण काण्ड यह, भाव शुद्धि से पढ़ें महान।
नर सुरेन्द्र के भोग प्राप्त कर, 'विशद' प्राप्त करते निर्वाण॥28॥

(अञ्चलिका)

भगवन् परिनिर्वाण भक्ति का, किया यहाँ पर कायोत्सर्ग।
आलोचन करने की इच्छा, करना चाह रहा उत्सर्ग॥
इस अवसर्पिणी में चतुर्थ शुभ, काल बताए अन्तिम शेष।
तीन वर्ष अरु आठ माह इक, पक्ष रहा जिसमें अवशेष॥
कार्तिक माह कृष्ण चौदश की, रात्रि का आया जब अन्त।
ऊषाकाल अमावस की शुभ, स्वाति नक्षत्र में जिन अर्हंत॥
वर्धमान जिन महति महावीर, सिद्ध सुपद पाए भगवान।
तीन लोक के भावन व्यन्तर, ज्योतिष कल्पवासी सुर आन॥
निज परिवार सहित चउ विध सुर, दिव्य नीर ले गंध महान।
अक्षय दिव्य पुष्प अरु दीपक, धूप और फल लिए प्रधान॥
अर्चा पूजा वन्दन करके, नितप्रति करते चरण नमन।
परि निर्वाण महा कल्याणक, का नित करते हैं अर्चन॥
मैं भी यही मोक्ष कल्याणक, का करता हूँ नित पूजन।
वन्दन नमस्कार कर करना, चाहूँ अपने कर्म शमन॥
दु:ख कर्म क्षय होवें मेरे, बोधि लाभ हो सुगति गमन।
जिन गुण की सम्पत्ति पाऊँ, 'विशद' समाधि सहित मरण॥

प्रशस्ति

ॐ नम: सिद्धेभ्य: श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदि सागराचार्य जातास्तत् शिष्य: श्री महावीर कीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्या: श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्य श्री भरत सागराचार्य श्री विराग सागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य-खण्डे भारतदेशे झारखण्ड प्रान्ते सम्मेदशिखर तीर्थ क्षेत्रे श्री वि.नि. 2549 मासोत्तममासे माघमासे शुक्लपक्षे चतुर्दश्यां शनिवासरे श्री सम्मेद शिखर विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।

निर्वाण क्षेत्र सम्मेदशिखर की आरती

करूँ आरती तीर्थराज की, भव तारक पावन जहाज की।
तीर्थंकर जिनवर गणधर की, अगणित मुक्त हुए मुनिवर की॥
करूँ आरती.....॥1॥

भव-भव के दु:ख मैटनहारी, बनते प्राणी संयमधारी।
तीर्थराज है मंगलकारी, जिसकी महिमा जग से न्यारी॥
करूँ आरती.....॥2॥

अष्टापद में आदि नाथ की, गिरनारी पर नेमिनाथ की।
चम्पापुर में वासुपूज्य की, पावापुर में वीर नाथ की॥
करूँ आरती.....॥3॥

ज्ञान कूट पर कुन्थुनाथ की, मित्र कूट पर नमीनाथ की।
नाट्य कूट पर अरहनाथ की, संवर कूट पर मल्लिनाथ की॥
करूँ आरती.....॥4॥

संकुल कूट पर श्री श्रेयांस की, सुप्रभ कूट पर पुष्पदंत की।
मोहन कूट पर प्रद्म की, निर्जर कूट पर मुनिसुव्रत की॥
करूँ आरती.....॥5॥

ललित कूट पर चन्द्र प्रभु की, विद्युत कूट पर शीतल जिन की।
कूट स्वयंभू श्री अनंत की, धवल कूट पर संभव जिन की॥
करूँ आरती.....॥6॥

कूट सुदत्त पर धर्मनाथ की, आनंद कूट पर अभिनंदन की।
अविचल कूट पर सुमतिनाथ की, शांति कूट पर शांतिनाथ की॥
करूँ आरती.....॥7॥

कूट प्रभास पर श्री सुपार्श्व की, अरु सुबीर पर विमलनाथ की।
सिद्ध कूट पर अजितनाथ की, स्वर्णभद्र पर पार्श्वनाथ की॥
करूँ आरती.....॥8॥

चरण कमल में श्री जिनवर की, दिव्य दीप से सूर्य प्रखर की।
'विशद' भाव से श्री गिरवर की, सिद्ध क्षेत्र जो है उन हर की॥
करूँ आरती.....॥9॥

निर्वाण क्षेत्र चालीसा

दोहा– परमेष्ठी हैं लोक में, पावन परम ऋषीश।
जिनके चरणों में विशद, झुका रहे हम शीश॥
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण का, चालीसा सुखकार।
गाते हैं हम भाव से, पाने भवदधि पार॥

(चौपाई)

श्री सम्मेद शिखर मनहारी, शाश्वत तीर्थ है मंगलकारी॥1॥
तीर्थंकर पदवी के धारी, अन्य ऋषीश्वर जो अनगारी॥2॥
काल अनादी मुक्ती पाए, सर्व अनंतानंत कहाए॥3॥
आगे वीतरागता धारी, शिव पाऐंगे मुनि अनगारी॥4॥
यह अवसर्पिणी काल कहलाए, संत अनेक मोक्ष पद पाए॥5॥
गणधर कूट से गणधर स्वामी, शिव पद पाते अंतर्यामी॥6॥
कूट ज्ञानधर शुभ कहलाए, कुंथुनाथ जी शिव पद पाए॥7॥
कूट मित्रधर आगे आए, श्री नमि जिनवर मोक्ष सिधाए॥8॥
नाटक कूट रहा शुभकारी, अरहनाथ का मंगलकारी॥9॥
संबल कूट भी है मनहारी, हुए मल्लि जिनवर शिवकारी॥10॥
संकुल कूट श्रेष्ठ कहलाए, श्रेयनाथ जी शिव पद पाए॥11॥
सुप्रभ कूट विशेष कहाया, पुष्पदंत जिनवर का गाया॥12॥
मोहन कूट पद्मप्रभ स्वामी, हुए जहाँ से अंतर्यामी॥13॥
निर्जर कूट से शिवपद पाए, मुनिसुव्रत तीर्थंकर गाए॥14॥
ललित कूट फिर आगे आए, चन्द्रप्रभ जी मुक्ती पाए॥15॥
विद्युतवर शुभ कूट कहाए, शीतल जिनवर मोक्ष सिधाए॥16॥
कूट स्वयंभू है मनहारी, जिनानंत का जो शिवकारी॥17॥
धवल कूट से शिव पद पाए, श्री संभव जिनराज कहाए॥18॥
आनंद कूट पे आनंद आए, अभिनंदन जी शिवपद पाए॥19॥
कूट सुदत्त है मंगलदायी, धर्मनाथ का मोक्ष प्रदायी॥20॥

अविचल कूट पे ध्यान लगाए, सुमतिनाथ जी शिव पद पाए॥21॥
कूट कुंदप्रभ को हम ध्याते, शांतिनाथ पद शीश झुकाते॥22॥
कूट प्रभास पे जाएँ भाई, जिन सुपार्श्व का मोक्ष प्रदायी॥23॥
कूट सुवीर है जानी मानी, विमलनाथ जिन की कल्याणी॥24॥
कूट सिद्धवर श्रेष्ठ कहाए, अजितनाथ जी शिव पद पाए॥25॥
स्वर्णभद्र शुभ कूट को ध्याते, पार्श्व प्रभू पद शीश झुकाते॥26॥
अष्टापद है तीर्थ निराला, जग जन का मन हरने वाला॥27॥
पर्वत जो कैलाश कहाए, आदिनाथ जी शिव पद पाए॥28॥
दश हजार मुनि और बताए, चक्री भरत भी मोक्ष सिधाए॥29॥
नागकुमार जीवंधर स्वामी, कामदेव पद पाए नामी॥30॥
निज आतम का ध्यान लगाए, कर्म नाशकर शिव पद पाए॥31॥
ऊर्जयंत गिरनार कहाए, नेमिनाथ जिन शिव पद पाए॥32॥
शंभू प्रद्युम्न अनिरुद्ध भी जानो, मोक्ष महापद पाए मानो॥33॥
कोटि बहत्तर सात सौ भाई, ने भी गिरि से मुक्ती पाई॥34॥
चंपापुर वासुपूज्य कहाए, गिरि मंदार से शिव पद पाए॥35॥
एक हजार अन्य मुनि गाए, इसी तीर्थ से मोक्ष सिधाए॥36॥
पावापुर है मंगलकारी, पद्म सरोवर है मनहारी॥37॥
महावीर जी शिव पद पाए, पूज्य तीर्थ निर्वाण कहाए॥38॥
जहाँ से मुनिवर शिव पद पाए, वह निर्वाण क्षेत्र कहलाए॥39॥
हम निर्वाण क्षेत्र सब ध्याएँ, हम भी मोक्ष महापद पाएँ॥40॥

सोरठा

पूज्य तीर्थ निर्वाण, ध्याते हैं हम भाव से,
करते हैं गुणगान, तीन योग से हम विशद।
चालीसा चालीस, दीप धूप के साथ में,
चरण झुकाएँ शीश, वे पावे निर्वाण पद॥

जाप–ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नमः।

आरती श्री सम्मेद शिखर की

तर्ज-श्री बाहुबली की आरती उतारो मिलके.....

श्री सम्मेद शिखर की आरती, उतारो मिलके।
उतारो मिलके, छवि निहारो मिलके।।
श्री सम्मेद शिखर की आरती, उतारो मिलके।।टेक।।

शाश्वत तीर्थराज है अनुपम, काल अनादि अनन्त कहा।
है निर्वाण क्षेत्र मंगलमय, शिव पद गामी तीर्थ रहा।।
तीर्थ क्षेत्र की यात्रा पावन, अतिशय पुण्य प्रदायी है।
मुक्ती का राही बनता जो, जिनवर का अनुयायी है।।
सम्मेद शिखर.....।।1।।

वर्तमान चौबीसी में से, बीस तीर्थंकर शिव पाए।
अजितनाथ सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म जिन कहलाए।।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, विमलानन्त धर्म स्वामी।
शांति कुन्थु अर मल्लि सुव्रत जी, नमि जिन पार्श्व मोक्षगामी।।
सम्मेद शिखर.....।।2।।

आदिनाथ जी अष्टापद से, वासुपूज्य चम्पापुर धाम।
नेमिनाथ गिरनार सुगिरि से, महावीर पावापुर धाम।।
मोक्ष महापदवी को पाए, जिनके भी हैं कूट महान।
विशद भाव से वन्दन करके, करें तीर्थ का हम सम्मान।।
सम्मेद शिखर.....।।3।।

तीन काल के तीर्थंकर हैं, अतिशयकारी पुण्य निधान।
भव्य जीव जिनकी अर्चा कर, करते हैं निज का कल्याण।।
दीप जलाकर आरती करते, तीर्थ क्षेत्र की महिमावान।
रत्नत्रय को पाके हम भी, प्राप्त करें पदवी निर्वाण।।
सम्मेद शिखर.....।।4।।

श्री भूत, वर्तमान, भविष्यत् विदेह क्षेत्रस्थ तीर्थंकरा

भूतकालीन तीर्थंकर

निर्वाण सागर महासाधु जी, विमल श्री धर प्रभू सुदत्त।
श्री अमलप्रभ उद्धर अंगिर जी, सन्मति सिन्धु कुसुमांजलि दत्त।।
शिवगण उत्साह ज्ञान परमेश्वर, विमलेश्वर यशोधर तीर्थेश।
कृष्ण ज्ञान शुद्धमति श्री भद्र, अतिक्रान्त शांताश्भूत जिनेश।।

वर्तमान कालीन तीर्थंकर

ऋषभाजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।
चंद्र पुष्प शीतल श्रेयांश जिन, वासुपूज्य जिनवर तीर्थेश।।
विमलानन्त धर्म शांति जिन, कुन्थु अरह मल्लि जिनराज।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व जिन, वीर चरण में झुकते आज।।

भविष्यत् कालीन तीर्थंकर

महापद्म सुर देव सुपारस, स्वयंप्रभ सर्वात्मभूत जिनेश।
देव कुलपुत्र उदंक प्रोष्ठिल जय, मुनिसुव्रत अर निष्पाप विशेष।।
निष्कषाय श्री विपुल सुनिर्मल, चित्रगुप्त समाधि गुप्त जिनेश।
अनिवर्तक जय विमल देवपाल, अनंतवीर्य पूजे तीर्थेश।।

"विदेह क्षेत्र स्थित विद्यमान विंशति तीर्थंकर"

सीमंधर युग बाहू सुबाहू, सुजात स्वयंप्रभ वृषभानन।
अनंत वीर्य सूरप्रभ विशाल कीर्ति, श्री वज्रधर चन्द्रानन।।
भद्रबाहु जिनराज भुजंगम, ईश्वर नेमप्रभ श्री वीर सेन।
महाभद्र देवयश अजितवीर्य जिन, विहरमान पूजें दिन रैन।।

आचार्य श्री विशदसागर जी द्वारा रचित 182 विधानों की विशाल श्रृंखला पर्वों के दिनों में करने योग्य विधान

1.श्री आदिनाथ मण्डल विधान
2.श्री अजितनाथ मण्डल विधान
3.श्री सम्भवनाथ मण्डल विधान
4.श्री अभिनन्दननाथ मण्डल विधान
5.श्री सुमतिनाथ मण्डल विधान
6.श्री पद्मप्रभु मण्डल विधान
7.श्री सुपार्श्वनाथ विधान
8.श्री चन्द्रप्रभु विधान
9.श्री पुष्पदन्त विधान
10. श्री शीतलनाथ विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ विधान
12. श्री वासुपूज्य विधान
13. श्री विमलनाथ विधान
14. श्री अनन्तनाथ विधान
15. श्री धर्मनाथ विधान
16. श्री शांतिनाथ विधान
17. श्री कुंथुनाथ विधान
18. श्री अरहनाथ विधान
19. श्री मल्लिनाथ विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
21. श्री नमिनाथ विधान
22. श्री नेमिनाथ विधान
23. श्री पार्श्वनाथ विधान
24. श्री महावीर विधान
25. पंच परमेष्ठी विधान
26. णमोकार मण्डल विधान
27. भक्तामर मण्डल विधान
28. सम्मेद शिखर विधान
29. श्रुत स्कंध विधान
30. याग मण्डल विधान
31. पंचकल्याणक विधान
32. त्रिकाल चौबीसी विधान
33. कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान
36. पंचमेरु विधान
37. लघु नन्दीश्वर विधान
38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. जिनगुण सम्पत्ति विधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. ऋषिमण्डल विधान
42. विषापहार स्त्रोत विधान
43. वृहदभक्तामर स्तोत्र विधान
44. वास्तु मण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांतिमण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्ट निवारक श्री पदमप्रभु विधान
47. चौंसठ ऋद्धि विधान
48. कर्मदहन मण्डल विधान
49. लघु नवदेवतर विधान
50. सहस्त्रनाम विधान
51. चारित्र लब्धी विधान
52. अनन्त व्रतमण्डल विधान
53. कालसर्प योग निवारक विधान
54. शनि अरष्टि निवारक विधान
55. आचार्य परमेष्ठी विधान
56. सम्मेद शिखरकूट पूजन विधान
57. सरस्वती विधान
58. विशद महाअर्चना विधान
59. कल्याण मंदिर विधान (बड़ागांव)
60. अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
61. अर्हतनाम विधान
62. सम्यक् आराधना विधान
63. मृत्युंजय विधान
64. शांति प्रदायक शांति विधान
65. लघु मृत्युंजय विधान
66. जम्बूद्वीप विधान
67. चारित्र शुद्धीव्रत विधान
68. क्षायिक नव लब्धी विधान
69. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
70. गोम्मटेश बाहुबली विधान
71. निर्वाण क्षेत्र विधान
72. तत्वार्थ सूत्र विधान (लघु)
73. त्रैलोक्य मण्डल विधान
74. पुण्यास्त्रव विधान
75. सप्तऋषि विधान
76. श्री शांति कुंथु अरहनाथ विधान
77. श्रावक व्रत दोष
78. तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान
79. सम्यक् दर्शन विधान
80. श्रुत ज्ञान व्रत विधान
81. चारित्र शुद्धिव्रत विधान (जाप्य)
82. मनोकामना पूर्णशांति विधान
83. कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान
84. तीर्थंकर पंचकल्याणक तिथि विधान
85. विजयश्री विधान
86. श्री आदिनाथ विधान (रानीला)
87. श्री शांतिनाथ विधान (सामोद)
88. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान
89. षट् खण्डागम विधान
90. दिव्य देशना विधान
91. श्री आदिनाथ विधान (रेवाड़ी)
92. नवग्रह शांति विधान
93. रक्षाबन्धन विधान
94. तीर्थंकर विधान
95. गणधरवलय विधान (लघु)
96. गिरनार गिरि विधान
97. श्री चन्द्रप्रभु विधान (तिजारा)
98. ऋषिमण्डल विधान (द्वितीय)
99. कालसर्प दोष निवारक कल्याण मंदिर
100. वास्तु विधान (द्वितीय)
101. भक्तामर विधान (चोपाई)
102. पद्मावती विधान
103. 96 क्षेत्रफल विधान
104. बड़े बाबा विधान
105. कल्पद्रुम विधान (लघु)
106. केवल्यलक्ष्मी प्राप्ति विधान
107. महावीर समवशरण विधान
108. चान्दनपुर महावीर विधान
109. श्री शांति विधान (शांतिनाथ खोह)
110. श्री पार्श्वनाथ विधान (खण्डेला)
111. सुगन्ध दशमी विधान
112. कर्म निर्झरव्रत विधान
113. निर्दुख सप्तमी व्रत विधान
114. रविव्रत पूजा विधान
115. सौभाग्यदशमी व्रत विधान
116. पुरन्दर विधान
117. रोहिणी व्रत विधान
118. अनन्त वीर्य केवली विधान
119. मौन एकादशी व्रत विधान
120. सुख सम्पति व्रत विधान
121. चन्दन षष्ठीव्रत विधान
122. श्री पार्श्वनाथ विधान (निमोला)
123. श्री पार्श्वनाथ विधान (गंभीरा)
124. यागमण्डल विधान (लघु)
125. चारित्र शुद्धि विधान (वृहद)
126. अष्टान्हिका विधान (वृहद)
127. चौबीस तीर्थंकर विधान (वृहद)
128. नवदेवता विधान (वृहद)
129. ऋषि मण्डल विधान (वृहद)
130. नवगृहशांति विधान (वृहद)
131. पंच बालयति विधान (वृहद)
132. तत्वार्थ सूत्र विधान (वृहद)
133. सहस्त्र नाम विधान (वृहद)
134. नन्दीश्वर विधान (वृहद)
135. महामृत्युंजय विधान (वृहद)
136. दशलक्षण विधान (वृहद)
137. रत्नत्रय विधान (वृहद)
138. सिद्धचक्र विधान (वृहद)
139. अभिनवकल्पतरू विधान (वृहद)
140. समवशरण विधान (वृहद)
141. इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
142. धर्मचक्र विधान (वृहद)
143. अर्हत् महिमा विधान (वृहद)
144. विदेह क्षेत्र विद्यमान बीस तीर्थंकर विधान (वृहद)
145. एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान (वृहद)
146. तीन लोक विधान (वृहद)
147. सोलहकारण भावना विधान (वृहद)
148. गणधर वलय विधान (वृहद)
149. चौबीस तीर्थंकर निर्वाण भक्ति विधान (वृहद)
150. चौबीस तीर्थंकर विधान (द्वितीय) (वृहद)
151. कल्पद्रुम विधान
152. चौसठ ऋद्धि विधान (लघु)
153. (कांजीबारस) श्रावण द्वादशी विधान
154. चूलगिरि विधान
155. पंचपरमेष्ठी विधान
156. तीस चौबीस विधान
157. आकाश पंचमी विधान
158. पुष्पांजलि विधान
159. नवनिधि विधान
160. साप्ताहिक सप्त विधान
161. पल्य विधान
162. शांतिभक्ति विधान
163. आ. श्रीविराग सागर विधान
164. चैत्य भक्ति विधान
165. श्री ऋषभदेव विधान
166. रत्नत्रय विधान
167. रक्षाबन्धन विधान
168. ऋद्धि सिद्धि विधान
169. भरत केवली विधान
170. सर्वतोभद्र विधान
171. शांतिविधान (सर्वोदयतीर्थ)
172. आदिनाथ विधान (अष्टापद)
173. ऋषभदेव विधान (नजफगढ़)
174. सैंतालिश भक्ति विधान

संकलन प्रयास : मुनि श्री विशालसागर जी महाराज

175. शांति विधान (तिजारा)
176. पंचकल्याणक विधान (लघु)
177. महावीर पंचकल्याणक विधान
178. श्री योगसार विधान
179. गणधर वलय विधान (लघु)
180. देहरा तिजारा चन्द्रप्रभु विधान (लघु)
181. जम्बू स्वामी विधान
182. जैनत्व संस्कार विधान
183. वृहद स्वयंभू स्तोत्र विधान
184. वृहद रक्षा बंधन विधान
185. मंगलाचरण विधान
186. तत्व भावना विधान
187. स्वर्ग लोक विधान
188. तीर्थ क्षेत्रकंपिला विधान
189. तीर्थ क्षेत्र प्रभाषगिरि विधान
190. तीर्थ क्षेत्र भेलूपुर पार्श्वनाथ विधान
191. सामायिक द्वात्रिंशतिका विधान
192. वृहद सहस्रनाम विधान
193. मनोकामना पूर्णकर्त्ता शांति विधान
194. सिंह निष्क्रीड़ित व्रत विधान
195. मेघमाला व्रत विधान
196. कवलचन्द्रायण व्रत विधान
197. कर्मचूर व्रत विधान
198. कनकावली व्रत विधान
199. लोक मंगल विधान
200. सोलह कारण विधान (लघु)
201. दश लक्षण विधान (लघु)
202. सप्त परम स्थान व्रत विधान (लघु)
203. णमोकार विधान (लघु)
204. देवशास्त्र गुरु विधान (लघु)
205. कल्याण मंदिर विधान (लघु)
206. आकाश पंचमी व्रत विधान
207. रोट तीज व्रत विधान
208. श्री आदिनाथ विधान (लघु)
209. श्री अजितनाथ विधान (लघु)
210. श्री सम्भवनाथ विधान (लघु)
211. श्री अभिनन्दन नाथ विधान (लघु)
212. श्री सुमतिनाथ विधान (लघु)
213. श्री पद्मप्रभु विधान (लघु)
214. श्री सुपार्श्वनाथ विधान (लघु)
215. श्री चन्द्रप्रभ विधान (लघु)
216. श्री पुष्पदन्त विधान (लघु)
217. श्री शीतलनाथ विधान (लघु)
218. श्री श्रेयांसनाथ विधान (लघु)
219. श्री वासुपूज्य विधान (लघु)
220. श्री विमलनाथ विधान (लघु)
221. श्री अनन्तनाथ विधान (लघु)
222. श्री धर्मनाथ विधान (लघु)
223. श्री शान्ति विधान (लघु)
224. श्री कुन्थुनाथ विधान (लघु)
225. श्री अरहनाथ विधान (लघु)
226. श्री मल्लिनाथ विधान (लघु)
227. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान (लघु)
228. श्री नमिनाथ विधान (लघु)
229. श्री नेमिनाथ विधान (लघु)
230. श्री पार्श्वनाथ विधान (लघु)
231. श्री महावीर विधान (लघु)
232. णवकार विधान (वृहद)
233. सिद्धचक्र मन्त्रावली विधान
234. कामदेव विधान
235. बाहुबली विधान (लघु)
236. जम्बूद्वीप विधान (वृहद)
237. आर्ष मार्गी यागमण्डल विधान
238. नन्दीश्वर विधान (लघु)
239. तत्वार्थ सूत्र विधान (लघु)
240. कर्मदहन विधान (लघु)
241. गणधर वलय विधान (संस्कृत)
242. रत्नत्रय विधान (संस्कृत)
243. दशलक्षण विधान (संस्कृत)
244. सोलहकारण विधान (संस्कृत)
245. नन्दीश्वर विधान (संस्कृत)
246. णवकार विधान (संस्कृत)
247. कवलचन्द्रायण विधान (संस्कृत)
248. नवग्रह शांति विधान (संस्कृत)
249. पंचमेरु विधान (संस्कृत)
250. कर्मदहन विधान विधान (संस्कृत)
251. सम्यक्त्व पच्चीसी विधान (संस्कृत)
252. सम्यक्त्व आराधना विधान (संस्कृत)
253. श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान (संस्कृत)
254. श्री आदिनाथ विधान (संस्कृत)
255. श्री पद्मप्रभु विधान (संस्कृत)
256. श्री चन्द्रप्रभु विधान (संस्कृत)
257. श्री पुष्पदन्त विधान (संस्कृत)
258. श्री वासुपूज्य विधान (संस्कृत)
259. श्री शांति विधान (संस्कृत)
260. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान (संस्कृत)
261. श्री नेमिनाथ विधान (संस्कृत)
262. श्री पार्श्वनाथ विधान (संस्कृत)
263. श्री महावीर विधान (संस्कृत)